GUNOM ACADEMY

श्री चौठचन्द्र पूजा

C HAUTH CHANDRA PUJA

रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजन विधि,

SACRED RITES OF THE MOON

पूजा सामग्री, संकल्प, मंत्र एवं संम्पूर्ण पूजा पद्धति सहित
एक विधिवत पुस्तिका



॥ प्रथम अध्याय ॥

पूजा सामग्री

अनुष्ठान हेतु आवश्यक सामग्री की सूची

- शुद्ध मिट्टी (महादेव का स्वरुप बनावें)
- कुश (तेकुशा), अनामिका (कुश, ताँबा) अँगुली में धारण करने वाला
- गंगाजल
- अक्षत (वासमती चावल)
- श्रीखण्ड चंदन (उजला चंदन)
- रक्त चंदन (लाल चंदन)
- चन्द्रौटा (छोटा प्लेट)
- अर्घा (छोटा ग्लास)
- पञ्चपात्र
- आचमनी
- घण्टी
- सराई
- लाल सिन्दूर
- फूल की माला
- तुलसी माला
- बेलपत्र
- दुर्वा (दुइव)
- धूप
- दीप
- पान
- सुपाड़ी (कसैली)
- पंचमेवा (मिठाई)
- पाकल केरा
- पंचामृत (दुध, दही, घी, मधु, शक्कर)
- जनेऊ
- कर्पूर
- घी
- दक्षिणा-द्रव्य
- केला पत्ता
- शंख
- नया वस्त्र

॥ द्वितीय अध्याय ॥

पूजा पद्धति

विधि एवं समय

यह चौठचन्द्र पूजा विशेष कर संध्या (शाम) में करने का प्रावधान है। पूजन करने वाले पूरे दिन व्रत में रहेंगे। किन्तु आवश्यकता अनुसार जरुरत हो तो फलाहार कर सकते हैं।

व्रती शाम में स्नान करने के पश्चात नूतन वस्त्र या धुला हुआ वस्त्र धारण करेंगे, तदनन्तर शुद्ध आसन पर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठ जायेंगे। अनन्तर शुद्ध जल में गंगाजल मिला देंगे। तदनन्तर अरिपन के अनुसार पूजन सामग्री को सजाकर यथास्थान (फल का डाली तथा छाँछी (दही)) को रखेंगे।

उसके बाद कलश का अरिपन जो होगा उस पर दीपयुक्त कलश को रखेंगे। उसके बाद दाहिने हाथ के मध्य अँगुली में कुश निर्मित पवित्री धारण करेंगे, तथा दाहिने हाथ में तेकुशा (कुश) तथा जल को लेकर अपने शरीर को सिक्त करने से पूर्व इस मंत्र को पढ़ेंगे, अनन्तर शरीर को सिक्त करेंगे।

नमो अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।
नमो पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।

॥ तृतीय अध्याय ॥

पञ्चदेवता पूजा

1 दाहिने हाथ में तेकुशा (कुश) तथा अक्षत लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

नमः श्रीगणपत्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत।

इसे केले के पत्ते पर ऊपर से बाएं तरफ से रखेंगे।

2 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

एतानि पाद्यार्घाचमनीय-स्नानीय पुनराचमनीयानि नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

3 दाहिने हाथ से फूल में चन्दन लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

इदमनुलेपनं नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

4 दाहिने हाथ से फूल में लाल चन्दन को लगाकर इस मंत्र को पढ़ेंगे।

इदं रक्तचन्दनं नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

5 दाहिने हाथ में अक्षत लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

इदमक्षतं नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

6 दोनों हाथों को जोड़ते हुए फूल/फूलों को लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

इदं पुष्पं / एतानि पुष्पाणि नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

7 एक दूर्वा/ अनेक दूर्वा को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

इदं दुर्वादलं / एतानि दुर्वादलानि नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।

8 एक बेलपत्र/बेलपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

इदं बिल्वपत्रं / एतानि बिल्वपत्राणि नमो गणपत्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः।

9 एक तुलसीपत्र/तुलसीपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं तुलसीपत्रं / एतानि तुलसीपत्राणि नमो गणपत्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः।**

10 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप ताम्बूल यथाभाग नानाविधि नैवेद्यानि नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।**

11 अर्घा में जल को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमाचमनीयं नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।**

12 फूल हाथ में लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एष पुष्पांजलि नमो गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः।**

॥ चतुर्थ अध्याय ॥

विष्णु पूजा

(विधवा स्त्री हेतु)

1 दाहिने हाथ में तिल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **नमो भगवन् श्रीविष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।**

इसे केले के पत्ते पर ऊपर से बाएं तरफ से दूसरे स्थान पर रखेंगे।

2 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

3 दाहिने हाथ से फूल में चन्दन लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमनुलेपनम् नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

4 दाहिने हाथ में तिल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एते तिलाः नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

5 दोनों हाथों को जोड़ते हुए फूल/फूलों को लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं पुष्पं / एतानि पुष्पाणि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

6 एक तुलसीपत्र/तुलसीपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं तुलसीपत्रं / एतानि तुलसीपत्राणि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

7 एक दूर्वा/ अनेक दूर्वा को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं दूर्वादलं / एतानि दूर्वादलानि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

8 एक बेलपत्र/बेलपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं बिल्वपत्रं / एतानि बिल्वपत्राणि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

9 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविधनैवेद्यानि नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

10 अर्घा में जल को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमाचमनीयं नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

11 फूल हाथ में लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एष पुष्पाञ्जलिः नमो भगवते श्रीविष्णवे नमः।**

॥ पञ्चम अध्याय ॥

गौरी पूजा

(सधवा स्त्री हेतु)

1 दाहिने हाथ में अक्षत लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे।

> **नमो गौरि इहागच्छ इह तिष्ठत।**

इसे केले पत्ते पर ऊपर से बाएं तरफ से तृतीय स्थान पर रखेंगे।

2 अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीय नमो गौर्यै नमः।**

3 दाहिने हाथ से फूल में चन्दन लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमनुलेपनं नमो गौर्यै नमः।**

4 दाहिने हाथ से फूल में सिन्दूर लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं सिन्दुराभरणं नमो गौर्यै नमः।**

5 दाहिने हाथ में अक्षत लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमक्षतं नमो गौर्यै नमः।**

6 दोनों हाथों को जोड़ते हुए फूल/फूलों को लेकर गौरी का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं पुष्पं / एतानि पुष्पाणि नमो गौर्यै नमः।**

7 एक बेलपत्र/बेलपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं बिल्वपत्रं / एतानि बिल्वपत्राणि नमो गौर्यै नमः।**

8 एक दूर्वा/ अनेक दूर्वा को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं दूर्वादलं / एतानि दूर्वादलानि नमो गौर्यै नमः।**

9 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविधनैवेद्यानि नमो गौर्यै नमः।**

10 अर्घा में जल को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमाचमनीयं नमो गौर्यै नमः।**

11 फूल हाथ में लेकर ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एष पुष्पाञ्जलिः नमो गौर्यै नमः।**

॥ षष्ठ अध्याय ॥

संकल्प

दाहिने हाथ में कुश-तिल-जल को लेकर अमुक मंत्र को पढ़ते हुए संकल्प करेंगे —

नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रे मासि शुक्ले पक्षे चतुर्थ्यां तिथौ, अमुक-गोत्रायाः मम अमुकी-देव्याः सकल-कल्याण-उत्पत्ति-पूर्वक-धनधान्य-समृद्धि-सकलमनोरथ-सिद्ध्यर्थं यथाशक्ति गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यज्ञोपवीत-वस्त्र-नानाविध-नैवेद्यादिभिः रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्र-पूजनं (तत्कथाश्रवणं) चाहं करिष्ये।

कथा पक्ष में (तत्कथाश्रवणं) शब्द का भी प्रयोग करेंगे।

॥ सप्तम अध्याय — मुख्य पूजा ॥

चौठी चानक पूजा

रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र

1 दाहिने हाथ में अक्षत को लेकर चन्द्रमा का जहाँ अरिपन दिया गया है, उस जगह पर केला का पत्ता रखकर इस मन्त्र को पढ़ेंगे।

> **नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।**

2 दोनों हाथों को जोड़ते हुए श्वेत फूल/फूलों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **श्वेताम्बरं स्वच्छतनुं सुधांशुं चतुर्भुजं हेमविभूषणाढ्यम् ।**
> **वरं सुधां दिव्यकमण्डलुञ्च करैरभीतिञ्च दधानमीडे ।।**
>
> **इदं ध्यानपुष्पम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

3 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **नमः सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसंभवाय गोविन्दाय नमो नमः ।**
> **एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि ।**
> **नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

4 जनेऊ को दाहिने हाथ में लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **नमो इमे यज्ञोपवीते बृहस्पतिदैवते नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

5 अर्घा में जल को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमाचमनीयम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

6 श्वेत (नूतन) वस्त्र लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **ओं इदं श्वेत वस्त्रं बृहस्पतिदैवतम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

7 दाहिने हाथ से फूल में चन्दन लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमनुलेपनम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

8 दाहिने हाथ से फूल में लाल चन्दन लगाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं रक्तानुलेपनम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

9 दाहिने हाथ में अक्षत लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमक्षतं नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

10 दोनों हाथों को जोड़ते हुए श्वेत फूल/फूलों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं पुष्पं / एतानि पुष्पाणि नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

11 एक दूर्वा/ अनेक दूर्वा को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं दूर्वादलं / एतानि दूर्वादलानि नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

12 एक बेलपत्र/बेलपत्रों को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदं बिल्वपत्रं / एतानि बिल्वपत्राणि नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

13 अर्घा में जल लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग-नानाविधनैवेद्यानि नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

14 पुनः अर्घा में जल को लेकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **इदमाचमनीयम् नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

15 फूल को दाहिने हाथ में लेकर भगवान (चतुर्थी चन्द्र) का ध्यान करते हुए ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **एष पुष्पाञ्जलिः नमो रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्राय नमः।**

॥ अष्टम अध्याय ॥

ब्रह्मणपूजनम्

अर्घा में जल-अक्षत-फूल-चन्दन को मिलाकर ये मंत्र पढ़ेंगे।

> **ॐ ब्रह्मणे नमः।**

उक्त मंत्र पढ़कर जल-अक्षत-फूल-चन्दन को भूमि पर रखेंगे।

॥ नवम अध्याय ॥

डाली उठाने के मन्त्र

घर के जितने भी सदस्य हों, वे सभी पूजा में उपस्थित होने के बाद दाहिने हाथ में एक-एक डाली (दधि, कदलीफल, नारिकेल इत्यादि) को लेकर चौठचन्द्र भगवान का ध्यान करते हुए अधोलिखित मन्त्र को पढ़ेंगे।

सिंहः प्रसेनमवधीत्सिंहो जाम्बवता हतः ।
सुकुमारक मा रोदीः तव ह्येषः स्यमन्तकः ।।

दाहिने हाथ में दही को लेकर चौठचन्द्र भगवान का ध्यान करते हुए इस मन्त्र को पढ़ेंगे।

नमो दिव्य-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम् ।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् ।।

सभी अर्घ को उठाने के बाद पूजा के पास सभी डाली को जल लेकर उत्सर्ग करें।

॥ दशम अध्याय ॥

विसर्जन

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हुए क्रम से विसर्जन करेंगे।

गणपत्यादि पञ्चदेवता

अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे और क्रम से भगवान गणपत्यादि पञ्चदेवता पर डालें।

> **नमो गणपत्यादि पञ्चदेवताः ! पूजिताः स्थ क्षमध्वम्, स्वस्थानं गच्छत।**

भगवान विष्णु — विधवा पक्ष में

अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे और क्रम से भगवान विष्णु पर डालें।

> **नमो भगवन् विष्णो ! पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व, स्वस्थानं गच्छ।**

भगवती गौरी — सधवा पक्ष में

अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे और क्रम से भगवती गौरी पर डालें।

> **नमो गौरि ! पूजितासि प्रसीद क्षमस्व (मयि रमस्व)।**

चतुर्थी चन्द्र

अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे और क्रम से भगवान (चतुर्थी चन्द्र) पर डालें।

> **नमो रोहिणी-सहित-भाद्रशुक्ल-चतुर्थी-चन्द्र पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ।**

भगवान ब्रह्मा

अर्घा में जल लेकर यह मंत्र पढ़ेंगे और क्रम से भगवान ब्रह्मा पर डालें।

> **ॐ ब्रह्मन् ! पूजितोऽसि, प्रसीद, क्षमस्व, स्वस्थानं गच्छ।**

॥ एकादश अध्याय ॥

दक्षिणा

दाहिने हाथ में कुश-तिल-जल तथा दक्षिणा को लेकर इस मन्त्र को पढ़ेंगे।

नमः अस्यां रात्रौ कृतैतत् रोहिणी-सहित-भाद्र-शुक्ल-चतुर्थी-चन्द्र-पूजन-(तत्कथा)-श्रवण-कर्म-प्रतिष्ठार्थम् एतावत् द्रव्यमूल्यक-हिरण्यम् अग्नि-दैवतं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे।

ॐ

॥ समाप्तम् ॥

श्री चौठचन्द्र पूजा पद्धति सम्पूर्ण

शुभमस्तु ॥ सर्वे भवन्तु सुखिनः ॥